

रा-रा रनकों तवहि पश्ये ॥ इति अंतरा । अथ आभोगः ॥

८८

४४

परम प्रीति रीति की जानही रह करि चरण

कमल जो गहिये ॥ ह्योत स्वामी गिरि धरन श्रीवि

दल एहि निधि छांदि अत कहो जो जश्ये ॥

रागिनी राम कली ताल जं जसुना के पद ॥

चित्त मै जसुना निम दिन जो राखो ॥ इति अष्टाई

भोगः ॥ तन मन धन अब लाल गिरि धरन कौ दे
करि चरण जव चितहि लावे ॥ स्नान स्वामी गिरि
धरन श्री विठल नैननि प्रकट लीला दिखावे ॥
रागिनी राम कली ताल ३ जमना के पद ॥ गुण
अपार एक माव कसो लोकहि ये ॥ इति प्रस्थाई ॥
तजो साथत भजो नाम जमनाजी कौ लाल गिरि ध

श-श

८५

89

के कूले ॥ इति प्रस्थाई ॥ लब्ध मकरंद के वस
भए भमर जेर वि उदै देवि मानौ कमल कूले ॥
इत्येतदा । अथ आभोगः ॥ करत ये जाव मरली
लेके सोवरो ब्रज वधू खनत तन सखि जो भूले ॥
चतुर्भुज दास जसना प्रेम सिंधु मै लाल गिरिध
राण अवहरवि कूले ॥ रागिनी राम कली नाल

भक्तके वस कृपा करतहैं सर्वदा ऐसी जसनाजी को
है जो साको ॥ श्रुतया । अथ आभोगः ॥ जाहि स
खनै जसनै नाम यह उचरे संग कीजे अब जाइ ता
को ॥ चतुर्भुज दाम अब कहतहैं सबनसो तानै ज
सने जसने जो भाको ॥ रागिनी राम कली ता
ल ॥ जसनाके पद ॥ प्राणपति विहरत जसना

श-श

५.

१०

रसमै भीजे ॥ राशिनी रामकली ताल ॐ जस
नाके पद ॥ हेत करि देत जसुनै वास ऊंजे ॥ ३
निश्चय्याई ॥ जहो निसि वासर रसमै रसिक व
र कहो लो वर नियो प्रेम पुंजे ॥ इत्येतया ॥ अथ
आभोगः ॥ यकित मलिता नीरय कित व्रज व
धूभीरकोउ वन धरत थीर सरलि सनिजे ॥ च

१ जसनाके पद ॥ बार बार जस तै गुण गान
कीजे ॥ इति अष्टाई ॥ एहि रसना तै जो नाम र
स अमृत भाग्य जाके सोई जो लीजे । इत्यंत राः
अथ आभोगः ॥ भोन तनया दया अनिहिकर
एग मया इनकी करे आसया सदा जीजे ॥ चत
भज दास करे सोई पिय पास रहै जोई जसनाके

राधा

२१

११

कौरूप अद्भुत देत आप जैसी ॥ नेद सस जो जा
नि दफ चरण गहरे एक रसनो कहा कहू विसेसी
रागिनी राम कली ताल ॥ जसनाजी के पद ॥
नेह कारन जसने प्रथम आई ॥ इति प्रस्थाई ॥ भ
क्त के चित्त की इति सब जानही ताहिने अतिही
आनर जो थाई ॥ अंतर्ग ॥ अथ आभोगः ॥ जै

तुभज दाम जसुनै जो एकज जानि मधु पकीना
ई चित लाइ येजे ॥ रागिनी राम कली ताल ॐ
जसनाके पद ॥ भक्त पर करि कृपा जसुन ऐसी
इति प्रस्थाई ॥ छोडि निज थाम विश्राम भूतल
कियो प्रकट लीला दिखाई जो नैसी ॥ इत्येतरा
अथ आभोगः ॥ परम परमारथ करत है पवनि

श-श

२२

१२

नरा ॥ अथ आभोगः ॥ सकल साव देन हार ताँते
करो उचार कहत हौ वार भूलि जिनि जावो ॥
नेद दासकी आस जसने शरत करो ताँते कहू
चरी चरी चित लावो ॥ रागिनी राम कली ताल
जं जसनाजी के पद ॥ भाग्य सौ भाग्य जसने
जो देखे ॥ इति अष्टाई ॥ वात लौकिक न जे पटि

सी जाके मत हतो मन उच्छया नाहि तैसी साधु जो
प्रजाई ॥ नेद दास प्रभ नाथ नाहि परी ऊत जो
ई जसना जूके गुण जो गाई ॥ रागिनी राम कली
नाल ॐ जसनाजी के पद ॥ जसने जसने जस
ने जो गावो ॥ इति प्रस्थाई ॥ सेस सहस्र सावगा
वत निम दिना पार वही पावत नाहि पावो ॥ ३०

ग.ग.

९३

93

मयीदा दिक् सख लहै प्रष्टिको प्रष्टि पति निश्चैमानो
इत्येतया । अथ आभोगः ॥ स्वाति जल हृद जव पर
तहै जाहिमें ताहिमें होतते सो जो वानो ॥ जसुनै क
पा जान सिंधु जल बहि मोन सूर गण शर कहो लो व
वानो ॥ गगिनी गम कली ताल जं जसना
पद ॥ भक्त को स्याम जसुनै प्रगम ओरे ॥ इति प्रस्था

जसुनै भजे लाल गिरि धरनको ताहि वर मिलेरी
इत्येतया ॥ अथ प्रभोगः ॥ भगवदी सेवा करि वात
उनकीले सदा सान्निध्य रहे केली मेरी ॥ नेददास
जे जाहि बलभ कृपा करे ताके जसुने सदा वस जोरे
री ॥ रागिनी राम कली ताल ॥ जसुनाजी के पद
नाम सहि सो ऐसी जो जानौ ॥ इति अष्टाई ॥

रा-रा

२४

देविहे नही सनी ताहि कहि आपनी ताकी यह वा
न कोऊ कैसे माने ॥ इत्यंत रा । अथ आभोगः ॥ ता
ही के हाथ निरमोल नयादी जिये जोई नीके करि प
र विजाने ॥ सर कहि करते हर वसिये सदा जसुन
को नाम लीजे जो छाने ॥ रागिनी राम कली ता
ल जसना के पद ॥ चररी ॥ जसने पति दाम

३॥ प्रानहीनात अच जातनाके सकल जमह रहत
ताहि हाथ जोरे ॥ इत्येतरा ॥ अथ आभोगः अन्नभवी
विना अन्नभव कहा जातही जाको प्रिया नही चित
वोरे ॥ प्रेमके सिंधुको मर्म जाग्यो नही सर कहि कहा
भयो देह वोरे ॥ रागिनी रामकली ताल ॐ जमना
पद ॥ फलफलित होत फल रूप जानै ॥ शनिप्रस्थार्थ

श-श

२५

नाऊं ॥ इति अस्याई ॥ ऐसी महिमा जानि भक्त की
सख दानि जोई मागों सोई जो पाऊं ॥ इत्येतया ॥ अ
थ आभोगः ॥ पतिन पावन करन नाम लीनें तर
न दफ करि गहे वरण कहै न जाऊं ॥ कुंभन द
स गिरि थरण सख तिरावतै ऐसी वाहन नही
पलक लाऊं ॥ रागिनी राम क ली ताल ॥ जम

के चिन्ह न्यारे ॥ शतिप्रस्थाई ॥ भगवद्दीको भगवद
सेरा मिलि रहे ताके वसतहीये प्राण प्यारे ॥ श्येतरा
प्रथमाभोगः ॥ गूढ जसुनै वात जोई अब जानही ता
के मन मोहन नैन तारे ॥ सूर सख सार निर्दोर वेण
वही जापर होय बलभ कृपारे ॥ रागिनी रामकली
ताल ॐ जसनापर ॥ जसुनै रस खानको सीस

श-श-

२६

१८

रागिनी रामकली ताल ५ जसुनापद ॥ जसुने
परतन मन प्राण थारों ॥ इति अस्याई ॥ जाकी
कीरति विसदकोत अव कहि सके ताहि नैनन ते
नने ऊटारों ॥ इत्येतदा ॥ अथ आभोगः ॥ चरण
कमल इनके जो चित्त रह्यो निस दिन नास माव
नै उचारों ॥ केसन रास कहे लाल गिरि धरन म

नाकेपद ॥ जसुनै अगानित अण गनै न जाही ॥
इतिअस्याई ॥ जसना तटरेन इतनै होय वेन उ
नकी सख देनकी करुवडाई ॥ इत्येतय ॥ अण
आभोगः ॥ भक्तमोगत जोई देत तेही छिन सोई
ऐसी करे कौन अण निवाही ॥ ऊंभन रास वि
रिथरन सख निरखतै कहो कैसे करि मन अचाई ॥

रा-रा- भनदासजो प्रभुको सुख देखत पहि जिय लेखत
५७ जसनें जो भरता ॥ रागिनी रास कली ताल ५ ॥
७७ जसना पद ॥ रासरस सागरे जसुन जानी ॥ इति
प्रस्थाई ॥ प्रति स्निह उतन वहत थारा तनें राखत
प्रपने उर मा ऊढानी ॥ इत्येतदा ॥ अथ प्राभोगः
भक्त को सहै भार देत प्राण अथार अनिहि बोलत

बि इनकी कृपा भई तो निहार्ये ॥ रागिनी रामक
ली ताल ॥ जसना पद ॥ सक्त इच्छा हरन ज
मने जो करता ॥ इति प्रस्थाई ॥ विनहि मागे हेत
करों लो कहै हेत जैसे काहू को कोऊ होय भरता
इत्येता ॥ अथ आभोगः ॥ जसना पुलित रासव
ज वधलीये पास मंदमेद हास मन जो हरता ॥ के

श-श-

५८

१४

जैसे राखत जननी पुर वारे ॥ श्रीविदल गिरिधरन

सेवा विहरतें भक्त को एक छिनना विसारे ॥

रागिनी राम कली ताल ॥ जमनाजी के पद ॥

कौन पैं जात जस नै जो वरनी ॥ इति प्रस्थाई ॥ स

वहिन को मन मोहन हरत सो पीय को मन एजो

हरनी ॥ इत्येता ॥ अथ आभोगः ॥ इति विना एक

मधुर मधुर बानी ॥ श्रीविट्ठल गिरिधरन वर वस
कीये कौन पैजात समहिमो बखानी ॥ रागिनी
राम कली जाल ॐ जसनापद ॥ भक्तप्रति पा
लि जेजाल दारे ॥ इति प्रस्थाई ॥ अपने रस रेखामे से
रा राखत सदा सर्वदा जोई जसुने उचारे ॥ इत्येतदा ॥
अथ आभोगः ॥ इनकी कृपा अब कहें लो वरनिये

रा-रा ५५ ११
रा परम अतिहि दुर्लभ परम ह्लादि सगरे करम
प्रेमपायी ॥ श्रीविठ्ठल गिरिधरन सीनिधि अवभ
कको देतहौ विनहि मोयी ॥ रागिनी राम कली
ताल ५ जमना पद ॥ जमने तमसो एकहो
ज तमहो ॥ इति अष्टाई ॥ करि कृपा दरस नि
सि वासर दीजिये तिहारे गुण मोनको रहे उयमहो

छिन रहेन जीवन थन ब्रज चंद मन आनंद करनी ॥
श्रीविठ्ठल गिरिधरन सहित आय भक्त के हेतु अव
तार थरनी ॥ रागिनी राम कली ताल ॐ जमनापद
जमुना जो नाम लेसो सभागी ॥ इति प्रस्थाई ॥ सो
ईस रूपको सरा चितन कोरे नेक नहि कलपे
जाहि लागी ॥ इत्येतदा ॥ अथ आभोगः ॥ अष्टिमा

१००
१०० रा. रा. गिनी जिनके ऐसे यनी से दर श्याम ॥ शंतेनरा ॥

अथ आभोगः ॥ देत सेजोग रस ऐसी पीय है जो

वस सुनत सजस नीहारो पूरे सब काम ॥ हू

स दास निकहे भक्त के कारन जमन एक छिन

नहीं करे विश्वास ॥ रागिनी राम कली ताल ॥

जमना पद ॥ जमने के नाम अथ दर भाजे ॥

इत्येतत् ॥ अथ आभोगः ॥ तमञ्जया पते सकल नि
धि पावही चरण कमल वित भ्रमर भ्रमही ॥ क
सदास निकहे कौन यह तप कियो तिहारे दरार
हतहेलता डुमही ॥ रागिनी राम कली ताल ३
जमनाके पद ॥ ऐसी केजी कृपा लीजिये नाम
इति अस्थाई ॥ जमनै जग वेदनी शान जान जो ।

रा-रा १९ जमने के नाम तेरे जो ले हैं ॥ इति प्रथमः ॥ जिन
की लगान लागी नेदला लसौ सरवस दे के निकट रहे
इत्येता ॥ अथ आभोगः ॥ जिनहि सगम जातवा
त मन में वानि विना एहि वानि कैसे जोये हैं ॥ हु
सदा सति जमने नाम नौ का भक्त भव सिंधु ते यो
जोत रेहै ॥ रागिनी राम कली ताल ५ जमनाप

इति अष्टाई ॥ जिनके गुण सुनि के लाल गिरिधर
न पिय आय सन साव ताके विराजे ॥ इत्येतरा ॥
अथ आभोगः ॥ ते छिनका जनों के जो सगरे सर
न जाइ के मिलन ब्रज वध समाजे ॥ कस दास
निकहे ताहि अत कौन डर जाके ऊपर जमनै सी
गाजे ॥ रागिनी राम कली ताल ॥ जमनापद

रा-रा

१०३

102

ली ताल जमुनापद ॥ जमनै सख कारती
प्राण पतिकों ॥ इति अष्टाई ॥ पीयजे भलत जि
है सखि करि देत तिनै कहो लो कहिये अतिहि इन
के हितकै ॥ इत्येतरा ॥ अथ आभोगः ॥ पिय सेरा
गान करै अतिरस उसवि भरे देत नारी करै लेत
जितकै ॥ दास परमानेद पाय अब ब्रज चंद

द ॥ जमनैकी आस अव करत है दास ॥ शतिअस्था
ई ॥ मनक्रम वचन कर जोरि कै मोगत निसदिना
राखिये अपनैही पास ॥ श्येतरा ॥ अथआभोगः
जहो अवसरिक वरसरिकनी राधिके दोउ जन संग
मिलि करत है दास ॥ दास परमानेद पाय अव ब्रज
चेद देखि शियाने नैनमेद हासे ॥ रागिनी राम क

श-श १०३ परमानंदपाय अत ब्रज वेदरावि अपने शरण
वहे जो जान ॥ रागिनी राम कली ताल
जगनापद ॥ जमुने पियको वसतस जो कीने
इति अस्याई ॥ प्रेमके फेदने वेर रावि निकट
ऐसे निरमोल नगमोल लीन ॥ इत्येतरा ॥ अथ
आभोगः ॥ तमजो पदावत नहो अव थावत

एहि ज्ञानत अति प्रेम गतिके ॥ रागिनी राम क
ली ताल ॐ जमनापद ॥ जमनेके साथ अवधि
रत है नाथ ॥ शतिप्रस्थाई ॥ भक्तके मनके मनोर
थ एत सब कहो लो कहिये अव उनकी जो वाथ
इत्येतरा ॥ अथ आभोगः ॥ विविध संसार भ्रमन
प्रेम प्रेम सजे वरनीत जान सो भावनी गान ॥ राम

रा-रा

१०४

जाके भजनते ही हीयमें वसें करे कृपा सर्वदा अप
नी पित्तसार ॥ कहत ब्रज पति तब सबनसों स
मजाय परो इनके चरण और नाहि आधार ॥

राशिनी राम कली ताल ॥ जसनाके पद ॥

एकरसना गुण अपार कौ करि वरनों ॥ इति प्र
स्थाई ॥ साथत सबे तजो भजो इनके नाम जाके सब

तिस दिन तिहारे रस रेवा भीने ॥ दास पर मानेद
पाय अब ब्रज चेद परम उदार जसने जो दीने ॥
राशिनी राम कली ताल ॥ जसनाजीके पद
जयामे पही सार भजि हे वारे वार ॥ इति प्रस्थाई
श्रीजसना जीको नाम जप तिस दिन जातै उत्तरे
गो भव सागर पार ॥ इत्येतत् ॥ अथ आभोगः ॥

श-श- सिंधुमे अतिहि हरवित भई कमलज्यौ फूलतरवि
१०५
प्रकासे ॥ इत्यंतय ॥ अथ आभोगः ॥ तननै मन
१०५
नै शाननै सर्वदा करति है हरि सेवा मडल हासे ॥
करत ब्रज पति तम सबनसो समजाय मिटे ज
मवास इनही उपासै ॥ रागिनी राम कली ताल
जं जमनापद ॥ जमनासो नाही कोउ डावकी

मिरन तैकै गोत रनों ॥ इत्येतत् ॥ अथ आभोगः
एकमनसै निर थार करिके करो सदा तट इनके
निकट रहनों ॥ कहत ब्रजपति तम सवनसौ स
सुजाय जयो हरि नाम और ककुकरनों ॥ रागि
नी रामकली ताल ३ जसनापद ॥ पिय सेवा
देवा भरि करि विलासे ॥ इति अष्टाई ॥ सूरतरस

रा.रा. श्रीजसनाजी निहारो दरसहो पाउ ॥ इति अष्टाई ॥
१६
श्रीगोवर्धन श्रीहेरावन व्रज राज भंग लगाउ ॥ इत्ये
१०६
नरा ॥ अथ आभोगः ॥ दिन दस पंचरङ्गे श्रीगोकुल
ढकरोनी चादन्हाउ ॥ दामन ऊपर करो कृपा निज
सेतन के सेवा आउ ॥ रागिनी रामकली नाल ॥
जसना के पद ॥ जगत में श्रीजसनाजी परम कृपा

हरनी ॥ इति प्रस्था ॥ जाके स्नान ते मिटे तहे सब
पाप होतहे आनंद साख की करनी ॥ इति प्रतया ॥
अथ आभोगः ॥ महिमो अगाथ अपार इनके गुण स
कल जस वेद अगाण वरनी ॥ कहत ब्रज पति त
मसवनसौ समजाय छूटे जम डरजो आवे इनकी
शरनी ॥ रागिनी राम कली नाल ॐ जमना पद

रा-रा-

१७

107

तत्तस्यै तत्तस्यै तत्ता ॥ इति प्रस्थाई ॥ सदेगाध सद्र
सद्र सतालउ पेरा मिलि फति देत मधुप मधु मचा ।
इत्येतया ॥ अथ प्राभोगः ॥ टिपारो सिर पीत अति
लालका छनी वनी किं किनी फिति फिति राति
हेत गावत स्वर सता ॥ गोविंद प्रभु गोप बालक
जयजय प्रेम प्रवरत्ता ॥ रागिनी रामकली ताल

ल ॥ इति प्रस्थाई ॥ विनती करत तरत सति लीनी
भयहै मोपे दयाल ॥ इत्येतदा ॥ अथ आभोगः ॥
जो कोउ मजन करत निरंतर तातै उरत जमकाल ॥
ब्रजपतिकी अति प्यारी कालिंदी समिरत होत नि
हाल ॥ रागिनी राम कली ताल जमनापद ॥
चर्वरी ॥ हृदय मोहन रसिक सावन सहित प्रयत्ना

रा-रा जे सेदर वरकी ॥ इति प्रस्थाई ॥ नेद कि सोर ज सो द

१०८

न नेद नागारन वल नापन महरकी ॥ इत्येतया ॥ अथ

प्राभोगः ॥ नव विमाल मउहास मनोहर अवगा स

था साव मोहन करकी ॥ विसरी दस लोचन चको

र नित प्रेम प्रिया भज थरकी ॥ रागिनी राम कली

ताल जमनापद चर्वरी ॥ सभग श्यामके सेरा

जमनापद ॥ आरति कीजे श्यामसंदरकी ॥ श्रुति
प्रस्थाई ॥ नेद कुमार रायिका वरकी ॥ इत्येतदा ॥
अथ आभोगः ॥ भक्ति करि दीप प्रेम करि वाती ॥
साधु संगति करि अत्र दिन राती ॥ आरति ब्रजजव
ती मनभावे श्यामलीला हित हरि वेश गावे ॥
रागिनी रामकली नाल ३ जमनापद ॥ आरतिकी

श-श-

१०४

109

जसनापट ॥ चर्चरी हारिमानी नाथ श्रेवर दीर्घ नैद
नैदन केवरसिक वरमन हरत सनद गिरिवर थ
न नीत कीजे ॥ इति प्रस्थाई ॥ सकल व्रज नागरी
दासित्व मरी सदा तन मोक सीत प्रति होत भीजे ॥
रंतेतया ॥ अथ आभोगः ॥ खीत स्वामी अमित शु
ण गणानि आगारे विनती करति सवे मोति लीजे ॥

राधिका विराजे ॥ इति प्रस्थाई ॥ नैन शालस भरी
सकल निशि सख करी कंद हृदि भुज यरी कामला
जे ॥ इत्येतदा ॥ अथ शोभाः ॥ मनक कंचन तनी
पीक ह्यासो मने प्रति हीर समें सनी रूप भाजे ॥ च्छी
तस्यामी गिरि धरन के मन वसी मन ही मन हसी
सख दीयो अजे ॥ रागिनी राम कली ताल ॥

रा.रा. जमनापद ॥ करत कलेउ मोहनलाल ॥ इति प्रस्था

१०

॥ ॥ मोखन मिश्री दूध मिर्लाई मेवा परम रसाल ॥

१०

इत्येतरा ॥ अथ आभोगः ॥ दायि ओदन एक वोन

मिर्लाई खात खवावत ग्वाल ॥ क्रीत खासि बन

गाउ चरावन चले लटक पशु पाल ॥

रागिनी राम कली ताल ३ जमना पद ॥ रायिका
श्याम सेदर कोणारी ॥ इति प्रस्थाई ॥ नाव सिख से
रा प्रनूप विराजत कोटि चंद इति वारी ॥ एक छिन
सेगन छाउत मोहन निरावि निरावि वलिहारी ॥
छीत स्वामि गिरिधर वस जाके सो हस भोन डलारी
इति आभोगाः ॥ रागिनी राम कली ताल ॥

रा-रा-

॥

वनमे रास रचोहे मोहन मरली बजावे ॥ सुरदास

प्रभु निहावे मिलनको वेद विमल जस गावे ॥ ॥

रागिनी रास कली ताल चर्चरी ॥ नमोदेवि

यसने नमोदेवि यसने हरकस मिलानांतराय ॥

इतिप्रस्थाई। निज नाथ मार्गदायिनि कुमारी का

म हरके करु भक्तिराय ॥ भुवे । इत्यंतरा । अथ ।

रागिनी रास कली ताल ४ षट्पदी जसनाजीके

श्रीजसनाजी निहारो दरस मोहि भावे ॥ इति प्रस्था

ई श्रीगोकुलके निकट वरुन हो लहरनकी खवि

आवे ॥ इत्येतरा प्रथमाभोगः सख करनी इः खहर

नी श्रीजसना जीजन आत उदि नहावे ॥ मदन मो

हन जूकी खरी पिथारी पट रानी जो कहावे ॥ हुंदा

श-श ल कमला रुण शति रुण परि मिलित जल भरेणासु
॥२
ना ॥ वज्र सुवति ऊच ऊंभ ऊंऊमरुण मरुः सारय
॥२
सि मार पितर पुना ॥ अथिर जति हरी विहति मी
सिते कुलतया मिथसु भगनयना मशति तद्वेषे ॥
नयन युग मल्य मिति वद्धत राणिच तानि रसिक
तानि धितया कुरुषे ॥ रजनि जागर जनित रागरे

प्राभोगः ॥ मधुप कुल कलित कमला वली व्यप
देश धारित श्रीकृष्ण प्रत भक्त हृदये ॥ सतत मति
शायित ह्री भावना जाततला रूप धारित निज
हृदये ॥ निज कुल भव विविध तरु कुसुम प्रत नी
र शोभया विलसदलि हेंदे ॥ स्मार यसि गोपी हेंद
प्रजित सरसमी शव प्रग नेंद केदे ॥ उपरि वल दस

रा-रा

११३

ताटेक चलन सतिरस्त संगीत सुत मद सदिन मधु
प कृत विनोदे ॥ निज ब्रज जना बना यात्र गोवर्ध
ने राधिका हृदय गत हृय कर कमले ॥ रति मति श
यितरस विदल स्याश्च कुरु वेणु तिनदा ज्ञान सरले ॥
रागिनी रास कली ताल ॐ षट्पदी ॥ प्रिय से
रा भरि रेण करि कलोले ॥ इति ग्रन्थाई सवन को

जित नयन पेकजै रहति हरि मीनसे ॥ मकरंद भर
मिषेणानंद सुविता सतत मिहहर्षीसु सेवसे ॥ तट
गता नेक सब सारिका मति गणस्तन विविध गु
ण सिंधु सागरे ॥ संगता सतत मिह भक्त जनताप
हति राजसेरी सरस सागरे ॥ रति भर अम जलो दि
न कमल परि मल व्रज प्रवति जल विहति मोदे ॥

रा-रा- येसी जसना जानि तम करो गुणगोन रसिक प्रीत
११४ म पायनेग मूले ॥ रागिनी राम कली नाल ॥
११५ करत खल सार निर्हार करके ॥ इति प्रस्थाई ॥
इत बिना ऐसी कौन करि हे साखी हरत डाल देद
वरषे ॥ इत्यंत रा । अथ आभोगः ॥ ब्रह्म सेवेय
जब करत है जी को तबहि इनकी वोम भुजा फरके

साव देंन पियको करत सैन चितन परत वेन जव
हि बोले ॥ इत्येतय ॥ अथ आभोगः ॥ अतिहि वि
द्यात सब बोत इनके हाथ नाम लेतहि कृपा करि
प्रतोले ॥ दरस करि परस करि थोत हिय में धरे
सदा ब्रज नाथ इन संगे लेले ॥ अतिहि साव करन
इव सबको हरन यह लीनो है परन दिजही कृले ॥

रा-रा' अज्ञान अथ हरि करि जाहि मिल वत पीय और प्या
१५
॥ ११५ ॥ अमेत रा । अथ आभोगः ॥ जिनहि संदेह करो
वात जियमें थरो प्रष्टि पथ अन्त सरो साख जो कारी
अमके अंजमें रास रस अंजमें एहि राखति अति रे
रा भारी ॥ जसुन अरु प्राण पति और सब प्राण स
त चहे जन जीव पर दया विचारी ॥ ह्योत स्वामी

दोरि करि सोर करि जाय पिय सो कहै प्रतिहि आन
र मनमै ज हरषै ॥ नाम निर्मोलन गले कोऊ नाम
को भक्त राखत हिये हर करषै ॥ रसिक शीतम
की होत जापर कृपा सोई जमुना जूको रूप परषै ॥
रागिनी राम कली ताल ५ छट्पदी ॥ यनजस
ने निधि देन हारी ॥ इति प्रस्थाई । करत श्यामान

रा-रा निकट वहन में दे ॥ जाके तट निकट हरि रास
११६ मेरुल रघो तहो निर्गत तना येई ये दे ॥ जयति
कल्लिंद गिरि नेदनी देति आनेदनी भक्त के हरे
सब डाव दे दे ॥ चित्र में ध्यान धर मरित ब्रज
पति कहै जयति जसुनै जयति नेद ने दे ॥
रागिनी रास कली ताल ॐ अष्टपदै जसुना के

गिरिधरन श्रीविठ्ठल प्रीति की लीये यह संपदारी
रागिनी रास कली नाल ॥ वदपदी ॥ चर्वरी ॥
जयति भानु तनया चरण प्रगल वंदे ॥ इति प्रस्था
ई ॥ जयति वज्रराज नेदन प्रिये सर्वदा देनि आनंद
पो शरद वंदे ॥ इत्येतत् ॥ प्रथमाभोगः ॥ जयति
सकल सब कारनी कल मनो हारनी श्रीगोकुल

श-श-

११७

११७

मेरा मोहि सप नैन दीजे मोरात नैन न रोई ॥

गदल पोन अरत प्रेमत मै विषया रस मै मोई ॥

रसिक कहत दीन कै जाचे लहरि समुद्र समोई

राशिनी राम कली ताल बहपदी ॥ श्री

जंता जी दीन जोनि मोहि दीजे ॥ इति प्रस्थाई ॥

नेदको लाल सदा वर मोय सब गोपिनकी दासी

श्रीजमुनै तमसी औरन कोई ॥ इतिप्रस्थाई ॥ क
रो कृपा निज दीन जोनिकै ब्रज निज वासी होई ॥
इत्येतया ॥ अथआभोगः ॥ राबो चरण शरणत
रनि तनया जनम आपदा खोई ॥ इह मेसारथ
पुनै स्वारथको सत पतिस गोन कोई ॥ प्रेमभ
जनमै करत विचनता सेत सेनाप सोई ॥ ताको

श-श

११८

॥ ११८

नाथ प्रतिशम भरे जल क्रीडा सख कारी ॥ मनो
नारा मय्य चंद विरात भरि भरि छिर कति नारी ॥
रोनी जूके पाइ लागि विनती करि गृह को कार
ज सब कीजे ॥ परमानंद प्रभु सब सख दाता
इह रस नैन भरि पीजे ॥ रागिनी राम कली
नाल ॥ अष्टपदी ॥ श्रीजसनाजी यह विन

कीजे ॥ इत्येतदा । अथशाभोगः ॥ तमहो परम
उदार कृपा निधि संत जनन सख कारी ॥ तिहा
रे वस वरतत राधा वर तट खिले गिरि थारी ॥
सब सखियन मिलि हर संग खिले अदभुत रास
विलासी ॥ तिहारि अलिन मध्य निकट केज डे
म कमल अह एहे सवासी ॥ अम जल सहित

रा. रा.

॥५॥

ल लालके उह वादने उरिये ॥ त्रिविध दोष हरि
हो कालिंदी नेक कृपा करि करिये ॥ गोविंद स
दा इहे वरमोरे तमहरे वरणा अत्र सरिये ॥ रागि
नो राम कली ताल ३ षट्पदी ॥ श्रीजसना
जी ^{भुवन पावनी} अथम उदारनी ^{धा} मैजोनी ॥ इति प्रस्थाई ॥ गो
पन सेग श्यामचन सुंदरनीर विभेगी दोनी ॥ इत्ये

नी वित्त धरिये ॥ इति अष्टमः ॥ गिरिधर लाल मु
खार विंद रति जन्म जन्म मोहिके रिये ॥ इत्येतत् ॥
अथ आभोगः ॥ विष सागर संसार विषम अति वि
स्रव संगते उरिये ॥ काम क्रोध अज्ञान तिमर अ
ति उर अंतरेते हरिये ॥ तस्मिन् निकट वसौ निज
जन संग रूप देवि मन धरिये ॥ गावे गुण गोण

रा.रा. जी पतित पावन कस्यो ॥ इति प्रस्थाई ॥ प्रथमही
१२- जव दरस दीनों सकल पाप जहेस्यो ॥ इत्येतया ॥
120 अथ आभोगः ॥ भुज तरंगान परस कीनों पय पो
नदे सख भस्यो ॥ नाम लेतहि गई उर मति कस
रस वसतस्यो ॥ गोप कत्या कीयो मजन लाल
गिरिधर वस्यो ॥ सूर श्रीगोपाल निरखत सकल

तया ॥ अथ आभोगः ॥ योगा चरणा परसते पावन
हरसि विलसत समानी ॥ सात समुद्र भेदि जमभ
गिनी हरि तव सिखल परोनी ॥ आलिंगन धेव
नरस विलसत प्रेम प्रेज दृकरानी ॥ गोविंद प्रभ
रवि तनया प्यारी भक्ति मुक्ति की खोनी ॥ ॥
राशिनी राम कली ताल ॐ षट्पदी ॥ श्रीजम

रा-रा

१२१

जे उग्र वैराग जाके विविध्यावन शरन ॥ मूर हरि
के भक्त दाता विम्व तारण नरन ॥ रागिनी राम
कली ताल १ षट्पदी ॥ गाउं रसिक नट भवा
ल गुण अने तन पार कमल नयन पिय जसोदा इ
लारु ॥ अति अस्थायी ॥ प्रकट पुरुष सारु पश्यवी
तल हरे भारु जानत महिमा जाके उरहि उरगहारु-

कारज सख्यो ॥ रागिनी राम कली ताल २ षट्
परी ॥ श्रीजसनाजी पतित पावन करन इति अ
स्थाई ॥ प्रथम ही जाको दरस पायो कोटि कल
मल हरन ॥ इत्यंतया ॥ अथ आभोगः ॥ पेढन
ही भज तरंग परसत मिदत जिय की जरन ॥
नाम उचरत सुहवानी बुधपोषन भरन ॥ उप

श-श

१२३

122

प्रभु हरि सर्व सदा तारु ॥ रागिनी रास कली ताल ३

प्रसपरी ॥ रासरस गोविंद करत विहार ॥ इति प्र

स्थाई ॥ सर सताके प्रलिनरम्य मंदे फले ऊंद मे

दार ॥ इत्येतया ॥ अथ प्राभोगः ॥ अद भुत शत द

ल विक सित कोमल सकलित कुसुद कल्लार ॥

मलय पवन वहे शारद श्रृणु चेद मधुप ऊंकार ॥

शेतेत ॥ अथश्रीभोगः ॥ राम कली एक नारु नाचे
अमोच विहारु कालिंदी अलिन सावी लोचन निहा
रु ॥ उत्तम भूषन थारु तन लेपि चन सारु वेदावन
चेद चडे दिसि उजियारु ॥ मोहन नेद कुमार अंग
अंग सुकुमारु गिरिवर थरजस त्रिलोक विल्लारु०
उभय कर उदारु व्रज भासिनि सिंगारु कस दास

रा.रा. निभेद मिलवत वेणु सरति वेधान ॥ ३००००० ॥

१२३

123

अथ आभोगः ॥ तरनिजाकरलहर विरचित पु
लिनकेलि वेधान ॥ शरद रजनी विमल उद पति
मलय पवन सहोत ॥ राग वारि समुद्र नोडव ला
स्य कला निथोन ॥ व्रज वधसेग सदित नोचन
लेन अवचरनोन ॥ वसी कृत गण सिंह सर ग

सुखर राट संगीत कला निधि मोहन नेद कुमार ॥ व
जभासिन संगप्रसु दित नावत तत चर्वित चत सार०
उभय स्वरूप सभगतासी वोको ककला सख सार०
कस रास स्वामी गिरिधर पिय पहे रसमय हार ॥
गगिनी रास कली ताल ३ अष्टपदी ॥ गोवि
दकरत मोहन गान ॥ इति अस्याई ॥ सप्त स्वर ग

रा-रा

१२४

१२५

मेरे प्राण जीवन थन गोरस मोर्ते हूर उगावे ॥ वेतो
खीर खांड एक वोनले विविध ले शातहि मोहि जगा
वे ॥ तेल संगेथ लगाइ प्रीतिसो नाते तीरनह वा
वे ॥ भूषन वसन विविध मन भाए पलटि पलटि
पहि गावे ॥ नैना ओजि निलक मद्या मद करि द
पन मोहि दिखावे ॥ घटरस विज्जन मोहि जे वावे

एथ कित व्योम विमोन ॥ कसदास विला सरस
शिवि थवन सब गुण ज्ञान ॥ राशिनी राम कलीना
ले ३ प्रथापदी ॥ दस्यो मोहि श्री वल्लभ गदह भावे
इति प्रस्थाई ॥ सति मैयो नैमोउर मोखन ह्य दस्यो
जो स्वपावे ॥ इत्यंत रा ॥ प्रथमा भोगः ॥ तेनो करु
एकि पिन कहा कहै नित उहि मोहि विजावे ॥

ग-ग-

१२४

125

दिवस आवत जब मेरो आगन चौक आवे ॥ वाजे व
हु विधि द्वारे वाजे वेदन वार वेथावे ॥ मेरे गुण गुति
जन पै मोको सस सरति जो सुनावे ॥ हरी हव
अछत दधि कुंम कुंम मेगल कलस भयावे ॥ येन
दिवावै दिज जनको मोपेस भरा प्रसीस पढावे ॥
केतिक बातक होहो दिनकी मोपे कही यन आवे ॥

हिनसौवी राखवावे ॥ भंवरा चकरे विविध वि
लौ नो लेकरि मोहि दिलावे ॥ विविधि कुसुम
पनै करु शहि लैले माला उर लावे ॥ सखद पर्येक
सेवारि मडल अतिता पर मोहि सखावे ॥ डोल ऊ
लावे रथ बैठावे हिंदोरा पलना ऊलावे ॥ रितव
सेत जानि जीय अपनैलै सरेरा छिर कावे ॥ जनम

श-श

१२६

126

मिटावे ॥ मेरे लोयें पावित्रा शास्त्री अति सेदर जो बना
वे ॥ सबे भोति शीति ब्रज जन की आपें करि जो
मि लावे ॥ दसमी विजे जानि खबर को जब अंक
र सीस थरावे ॥ वज्र विधि पाक सेवारि मोहि हि
न मणि दीप दोनही दिवावे ॥ शरद एन्यो रास
दिन मेरो नट वर भेष बनावे ॥ मोर मुकुट पीतो

मेरे प्राङ्भीव दिवस दिन आनेद उरन समावे ॥ न
न दिनन एभोग करि मोको हितसो भोग लगावे ॥
वसि यलाव के नीरसे चेदन लेक हरसो वसावे ॥
सीतल वारि वयार अति सीतल देमे वामोहिरिजा
वे ॥ सीतल नीर संगेय सवासित करि अघि वास
न लावे ॥ अरि अरिजल जनाय सीस पर मोतन ताप

रा-रा- जन वृथा जन्म गवावे ॥ दसिक कहै श्रीवल्लभ क
रुणा विनु इह फल कवहेन पावे ॥ रागिनी राम
कली ताल अष्टपद ॥ चर्चरी कुंवरी राधि
का नव सकल सौभाग्य सौवधा वदन परकोटि श
न चेदवारो ॥ इति अष्टाई ॥ विजन ऊरेग शतको
टि नैननि उपर बारनै करत जीयमें विचारै ॥ इत्ये

वर काच्छनी सरली करहि गहावे ॥ सरभी वरद्यों
ति ऊझकी निसि फति फति लाउलशवे ॥ सरप
ति मोत भेग प्रति पदतव यो गिरि राज पूजावे ॥
कार्तिक सरि एका दशिके दिन केज महल जो व
नाटे ॥ पाट सरंग वसन परि रावत प्रवो धनी प
रव मनावे ॥ अति मति मेद कर मजउ कलि युग

श-श द्यो ॥ नाग शत कोटि वेनी उपर कपीत शत को
१२८
१२८
दि श्रीवो परवारि हरि सारो ॥ कमल शत कोटि क
र जगल परवारनैना हिन कोउ लोक उप सो जथा
रो ॥ दस के भन स्वामिनी सनख सिख श्रेय अद
भन सदन कहो लमि से भारो ॥ लाल गिरिवर
थरन कहत मोहि नोहि लो सख जो लो बह रूप

तया ॥ अथ आभोगः ॥ कदली शत कोटि जेवन उ
पर सिंह शत कोटि कटि परल्यो छावर उतार्यो ॥
मत्त राज कोटि शतवाल पर ऊभ शत कोटि इन
ऊवन पर वारि श्यो ॥ कीर शत कोटि नासा उपर
ऊंद शत कोटि दसनति उपर कहिन पार्यो ॥ पक्क
केहर वेधक शत कोटि अथरनि उपर वारि रुचिगर्भ

ग.ग.

१२५

१२९

प्रणयप्रभोगः ॥ व्रज हृदये वयस्य सखी हृदये
गी गणा निरूपम भावा मंगल सिंधुचयाः ॥ मे
गल मीषत्सित श्रुत मीक्षणा भाषण मन्त्रत ना
साष्ट गत मुक्ता फल चलने ॥ कोमल चल दे
लि दल संगत वेणु निनाद विमोहिति हृदय वन
भविजाता ॥ मंगल मणिले गोपी शिखरति मेघ

छिन छिन निहारौ ॥ रागिनी राम कली ताल
३ मंगलार्ति ॥ मंगल मंगल ब्रज भवि मंगले
इति प्रस्थाई ॥ मंगल मिह श्रीनेदयशोदा नामसकी
तनमै तडुचिरोत्सेग सुलालित पालित रूपे ॥
अवपद ॥ श्री श्री कृष्ण इति शक्ति सारे नामस्मा
नजना शयना पापह मिति मंगलरावे ॥ इत्येतया

श-श नी ॥ ज्ञान मगन तम करइ कलेउ मेरे सब स
खेनेनी ॥ जननी वचन सति तरत उदे हरि कह
त बात ततरोनी नेद दास कीनों बलि हारी जसम
ति मन हरत खोनी ॥ रागिनी राम कली ताल
प्रपदी चर्चरी ॥ नवकेवर चक्र च्छान्द पति सो
वरो राधिके तरुणि मने पद शनी ॥ इति प्रस्थाई

130

130

रगति विश्रम मोहति रासस्थित गाने ॥ नैजय सत
ते गोवर्धन थर पालय निजदा सान ॥ रागिनी रास
कली ताल ३ षट्पदी ॥ जगावति अपनै सत
कौ रोनी ॥ इति प्रस्थाई ॥ उहो मेरे लाल मनोहर
संदर कहि कहि मधुरी बोनी ॥ इत्येतदा ॥ अथ आ
भोगः ॥ मोखन मिश्री और मिटाई हथ मलाई ओ

श-श नी ॥ सत्यगुण पाविया काल बड्वा जहो डारिये
131
131 काम जन सहकत निसानी ॥ नील मर्कत थै जेज
कस मित महल मध्य कमनीयसे पढ़ोनी ॥ पलत
विचुरत होउ जात नहो तहो कोउ व्यास महल नि
लिये पीक होनी ॥ शशिनी राम कली ताल ३
षट्पदी ॥ वनी वृष भोन जानकी वेदी ॥ इति ॥

मेस गृह आदि वैकुण्ठ पर्यंत लो लो कथनै तब जरा
जयंती ॥ इत्येतदा ॥ अथ आभोगः ॥ मेव ऊप
न कोटि वागसीव तजहो सक्ति चारों जहो भरत
पौती ॥ सुर ससि परुरुवा पवन परजन्य इंद्र च
रण दासी भाट निगम बोती ॥ धर्म कृत बाल सु
क सून नारद चारु बाल सनकादि चरचारिजा

रा-रा- रागिनी रागकली ताल जीत ब्रह्मपदी ॥ दधि मय
१३२
ति नेद नैरेद रागी करति सत राग गान ॥ इति ब्रह्म
१३२
इ ॥ नील निरद श्रेय दिव्य इकल वरपविधान ॥ ने
ति करषति हरष थरकति वलय केकन पान ॥
इमेतया ॥ अथ प्राभोगः ॥ स्वेदक नयन वदन वि
धुपर सथा विंड समान ॥ केश कसमानि करत स

स्थाई ॥ निविडति कुंज कुसुम पेजति परश्याम वो
स श्रेय लेटी ॥ इत्येतरा ॥ अथश्राभोगः ॥ रतिनि
सि जागी सोवत मोर किशोर कुंवारी गुजरैटी ॥ पि
यके द्वियमै जिय ज्यो राजत नाइ वाइ बल वेटी ॥
नैननि की सैननि कल मानौ मन मय अमिख विटी-
लोभिलाल व्यासकी खासिनि केवन रासि समेटी ॥

ग.स.

१३३

१३३

गितादेककलकनिकान ॥ पयो थरपय श्रवत
वायिक कस पत निधायन ॥ सहस श्रानन करि
सके नही व्यास भाग वावान ॥ जगत वेदत मान
पित्र निगादा थरथरि थान ॥

अथ रागिनी विभावती गीत गोविंद परिच्छेद माह ताल
श्लोक ॥ मैत्रैर्मैत्रं मेवरेवन भवः श्यामास्तमालडुमै
नक्तंभीरुर्यं त्वमेव तदिमं शये गृहे प्रापय । इत्येतेन
निदेशतश्चलितयोः प्रत्यधकेन डुमै । राधा मायवयो
र्जयन्ति यमना कृते ररः केलयः १ वाग्देवता चरित
चित्रित चित्तसमा पमावती चरण चरण चक्रवर्ती ॥

श-वे
गी

श्री वासुदेवरतिकेलिकथासमेतमेतेकरोति जयदेव
कविः प्रवच्यम् २ यदि हरिस्मरणे सरसे मनो यदि वि
लासकला सकृत्कृतम् । मधुरकोमलकान्तपदावली
मृणा तदा जयदेव सरस्वती ३ वाचःपल्लव यत्प्रमापति
यः सन्दर्भं मुहि गिरौ । जानीते जयदेव एव शरणा म्ना
द्यो उद्वहते । मृणालोत्तरसत्प्रमेय वचनै राचार्यगोवर्द्ध

न स्याद्दीकोपिन विष्कतः श्रुतिथरो योथीः कविस्माप
तिः ॥ ४ ॥ अष्टपदी ॥ प्रलयपयोधिजले धृतवानसि वेदे-
विहित वह्निव च दिव मवेदम् । केशव धृतमीनशरीर
जयजगदीशहरे । अक्व ॥ १ ॥ क्षिति रति विप्रलतरे न
व निश्चिन्ति एष्टे । थराणी थराणि किण्वक्रगरिष्टे । केश
व धृत कच्छपरुष जयजगदीशहरे २ वसति दशान

श-ले
गी

शिवरेथरणी तवलशा । शशितिकलेक कलेवनिमशा
केशव धृत सुकरुण जय जगदीश हरे । ३ । तव कर कम
लवरे नावमदुत श्रेयो । दलित शिरण कशिपु तनु भेंगे
केशव धृत नर हर रूप जय जगदीश हरे ४ छलयसि
विक्रमो वलिमदुत वामन । पदनवती रजनि जत
पावन । केशव धृत वामन रूप जय जगदीश हरे ॥ ५ ॥

क्षत्रियरुधिरमये जगदपगतपापे । सप्तपयसि पयसि श
मितभवतामम् । केशवधृतमृगपतिरूप जय जगदीश
हरे ६ वितरसि दिक्षु रणे दिक्पति कमनीये । दशमुख
मौलिवलिरमणीयम् । केशवधृतशमशरीर जय जग
दीशहरे ७ वहसि वपुषि विशदेवसने जलदाभे । हस्त
हतिभीतिमिलितयमनामम् । केशवधृतहस्तथररूप

रा-ख
गी

जयजगदीशहरे ८ निन्दसि यत्तवियेरहह प्रतिजाते । स
दय हृदय दर्शितपञ्चात्म । केशव धृत ब्रह्मशरीर जय
जगदीशहरे ९ म्लेच्छनिवहनिधने कलयसि करवाले-
धूमकेतुमिव किमपि कालम् । केशव कल्कि शरीर-
जयजगदीशहरे १० श्रीजय देवकवेरिद सद्दित सुदारे ॥
मृणु सुभदे सखदे भवसारे । केशव धृत दशविधरूपज

य जगदीशहरे ॥ श्लोक ॥ वेदावदहते जगन्निवहते भूगो-
लमदिभते । दैत्यावदारयते वलिं क्षलयते तत्रत्ये कर्बते-
पौलस्त्ये जयते हले कलयते कारुण्यमातन्वते । स्नेह्या-
न्मूर्च्छयते दशाकृतिधत्ते क्लृप्ताय तभ्येतमः ॥ १२ ॥ अष्ट-
पदी ॥ १ ॥ श्रित कमला कव मेडल धत केडल । कलि-
तललित वनमाल । जयजय देव हरे । अक्व ॥ १ ॥ दिन

श-ले
गी

मणि मेडल मेडन भव विडन । मति जनमान सहस्र जय
जय देव हरे २ कालिय विषथरंग जन जन रे जन । यडक
ल नलिन दिनेश जय जय देव हरे ३ मधु सरनरक विना
शान गरुडसन । सरकुल केलि निदान जय जय देव हरे
४ प्रमल कमल दल लोचन भव मोचन । त्रिभुवन भवन
निधान । जय जय देव हरे ५ जनक सता कृत भूषण जि

तद्दृष्ट्वा । समरशामितदशाकेटजयजयदेवहरे ६ अभि
नवजलयरसंदरपतमंदर । श्रीमत्तवेदवकोरजयज
यदेवहरे ७ तव चरणे प्राणतावय मिति भावय । ऊरु
ऊशले प्राणतेषु जयजयदेवहरे ८ श्रीजयदेवकवेरि
देऊरुतेमदम् । मेगलमञ्जलगीते जयजयदेवहरे ९
श्लोक ॥ पद्मा पयोधरतटी परिरेभलग्न काश्मीरम्

रा. वि.
गी.

द्विजसरो मधुसूदनस्य। व्यक्तानुरागमिव खिलदनेगा वि
दस्वेदासुखमनस्ययत्न प्रियेवः॥१॥ वसेतेवासनीज
समसुखमारैरवयवैर्भुमेती कोतारे। वद्धविहितकसा
नशरणो। अमने कंदर्पज्वरजनित विताकलतया। व
लक्ष्योरायो सरसमिदमूवे सहचरी॥२॥ अष्टपदी॥३॥
ललितलवेगलतापरिशीलनकोमलमलय समीरे।

मधुकरति करकरिचितको किल कृजित ऊँज ऊँटीरे । १
विहरति हरिहर सरसवसेते नृत्यति सुवति जनेत समे
सावि विरहिजनस्य डरेते भव । उन्मदमदन मनोरथ
पथिकवधजनजनित विलापे । अलि कुल सेकुल ऊँ
सम समूहनिग कुलवकुल कलापे २ मरगमदसौरभ
रभसवशास्वदनवदल मालतमाले । सुवजन हृदयवि

राखे
गी

दाराणमनसिजनख रुचि किंशुक जाले ३ मदनमहीप
ति कनक देउरुचि केसर ऊखम विकासे । मिलितशि
ली मखपादलि पटल कृतसरत्न विलासे ४ विरा
लित लज्जित जगदवलोकन तरुणा करुणा कृतहासे ।
विरहि निरुक्त मखा कृति केतकि दन्तरितासे । ५॥
माथविकापरि मलललिते वनमालिक याजिसंगेथो-

मृतिमनसा मपि मोहन कारिणि तरुणा कारण वंथौ । ६ ।
स्फुरदतिमक्त लता परिरेभा मज्जलित पलकित चूने-
हंदावन विपिने परि सर परिगत यमना जलशेते ७
श्रीजयदेव भणित सिद्ध मदनयति । हरिचरण स्फुरति सा
रम् । सरसव सन्त समय वन वर्णन मन्वगात मदन वि
कारम् ८ ॥ श्लोक ॥ दरविदलित मल्ली बलि वेचत्परा

श.ख.
गी.

गप्रकटितपटवासैर्वीसयत्काननाति । उहृदिदहति
चेतः केतकीगान्यवन्धुः प्रसरदसमवाण प्राण वहेथ
वाहः १ उन्मीलन्मधुगान्य लव्यमधुप व्याधत हृताड्
कस्त्रीउत्कोकिलकाकली कलकलै रुहीणी कणीज्व
राः । नीयन्ते पथिकैः कथे कथमपि ध्यानावधानत
ए प्राप्ता प्राणा समा समा गमरसो लासै रमी वासराः २

अनेक नारी परिरेभ सेशुमस्फुरन्मनो शारिविलासलाल
सम् । मयारिमागडपदर्शयेत्यसौ साखी समक्षे प्रनगर
राधिकाम् ३ ॥ अष्टपदी ४ ॥ चेदन चर्वित नील कलेव
र पीत वसन वनमाली । केलि चलन्मणि केउल मेदि
त गेड प्रगलित शाली । हरिहरमग्य वध्निकरे वि
लासिति विलसति केलिपरे ५ ॥ अन्त ॥ पीनपयोधरभा

रा.वे
गी

२ भरेण हरिं परिरभ्य सगमम् । गोपवधूरन् गायति काचिद
द्वैचितपंचमरागम् । हरिहर मग्यवधूतिकरे विलासिति
विलसति केलिपरे २ कापि विलास विलोल विलोचनखे
लन जनित मनोजे । ध्यायति मग्यवधूरयिके मधुसूदन
वदन सरोजम् हरिहर मग्यवधूतिकरे विलासिति वि
लसति केलिपरे ३ कापि कपोलतले मिलिता लपिते

किमपि प्रतिमूले । चारु बुबुम्ब नितम्बवती दयिते ३
लकैरनुकूले हरिहर मगधवधूतिकरे विलासिनि विल
सतिकेलिपरे ४ केलिकलाकृतकेनचकाचिदम्ब यम्ब
ना जलकूले । मेज्जल वेज्जल केजगते विव कर्ष करेण
उकूले । हरिहर मगधवधूतिकरे विलासिनि विलस
तिकेलिपरे ५ करतल ताल तरल वलय वलिकलित

शंख-
गी

कलस्वनवेशे । शशसे सहस्रपराशरिणा प्रवतिः प्रश
शेषे । हरिहर मगधवधनिकरे विलासिति विलसति
केलिपरे ६ श्लिष्यति कामपि बुभुवति कामपि कामपि
रमयति रामे । पश्यति सस्मितवारुपरा परा मनगच्छ
ति वामे ॥ हरिहर मगधवधनिकरे विलासिति विलसति
केलिपरे ७ श्रीजयदेवभणित सिद्धमद्भुतकेशवकेलि

रहस्यम् । विपिनविनोदकलावलिने वितनोत्त शुभा
नियशास्यम् । हरिहरमग्यवधूतिकरे विलासितिवि
लसतिकेलिपरे द ॥ श्लोक विशेषा मन्त्रं जनेन जन
यन्त्रानन्दमिदो वर । अणी श्यामलकोमलैरुपनयन्नै
रनेगोत्सवम् । सच्छन्दे व्रजसेदरी भिरभितः प्रत्यह मा
लिङ्गितः । अंगारः सविमूर्तिमानिव मयौ मयौ हरिः

श-ले
गी

क्रीडति १ अयोत्सङ्गवसद्भजेण कवलकेशादिवेशावले
प्रालेये सवने च्छयान्न सरति । श्रीविउ शैलानिलः । किं
चस्त्रिग्यरसालमौलि मुकुलान्यालोक्य हर्षोदया । उ
न्मीलेति ऊहः ऊहूरिति कलो तालाः पिकातो गिरः २
रासोत्प्लासभरेण विभ्रमभ्रता साभीरवामभ्रवा । मभ्य
र्त्तो परिरभ्य निर्भरस्वरः प्रेमोऽथया राथया । साधुत्वहृद

ने सधामयमिति व्याहत्य गीतस्तुति व्याजाउद्भटचरिव
तः स्मितमनो शरीरहरिः पात्रवः ३॥ विहरति वने राधा
साधारण प्रणये हरौ विगलित निजोत्कर्षा दीप्य विशेषत
गतामृतः । कविदपि लताकंजे येन तन्मथ व्रतमेतलीसु
खरशिखरे लीना दीनासु वाचरहः सखीम् ४॥ अष्टप
दी ५॥ सेवरे दयरे सधामथर ध्वति सखरित मोहनवेशे

शांते
गी

वलितटगोचलवेवलमौलिकपोलविलोलवतेसम। रा
सेहरिमिह विहित विलासे सरति मनो ममकृतपरिहासे
अव॥१॥ चंद्रकचारुमयूरशिखिउक मेडल वलयितके
शाम्। प्रचुरप्रन्दरयनरनरेजितमेडरसदिरसवेशाम्
यामेहरिमिह विहित विलासे सरति मनो ममकृतपरिहा
सम्॥२॥ गोपकदम्ब तितम्बवती सखचुम्बनलम्बित

लोभम् । वेद्यजीवमश्रयथरपलवमलसितस्मितशोभे
रासे हरिमिरविहितविलासे स्मरति मनोमम क्लृप्तपरि
हासम् ३ ॥ विपुलपुलकभजपलववलयितवलवय
वति सरसम् । करचरणोरसिमणिगणभूषणकिर
णविभिन्नतमिस्रम् । रासे हरिमिरविहितविलासे
स्मरति मनोमम क्लृप्तपरिहासम् ४ जलदपटलवल

श. स्त्रे
गी

दिङ् विनिर्दक चेदन तिलक ललाटम् । पीत पयोधर परि
सर मर्हव निर्दय हृदय कवाटम् । शशे हरिमिह विहित
विलासे स्मरति मनोमम क्लृप्त परिहासम् ५ मणिमय
मकर मनोहर केरुल मेदित गोड सुदारम् । पीत वसन म
नुगात मतिमनुज सग सरवर परिवारम् । शशे हरिमिह
विहित विलासे स्मरति मनोमम क्लृप्त परिहासम् ॥ ६ ॥

विशदकदम्बतले मिलिते कलिकलषभये शमयेतम्
सामपि किमपि तरेय दनेग दृशा मनसारमयेतम् । रा
से हरिमिर विहित विलासे सरति मनोमम कसपरि
हसम् ७ श्रीजयदेवभाषित मतिसेदर मोहन मधुरिष
हृषम् । हरितरणा सरणे प्रतिसे प्रतिपणवन्ता मनरूपे
रासे हरिमिर विहित विलासे सरति मनोमम कसपरि

रावे
मी

हासम् ८॥ श्लोक ॥ गायति गायामे भामे भ्रमादपि
नेहने वहति च परीतोषे दोषे विमुच्यति दूरतः । प्रवतिष्ठ
वत् तस्मै कृष्णे विहारिणि मोविता प्रनरपि मनो कामे
कामे करोति करोमि किम् ॥ अष्टपदी ६॥ तिभ्रतति
ऊँ जगद्दे गतया निशि रहसि निलीय वसेते । चकितवि
लोकित सकल दिशारति रभ सरसे न हसेते । सखिहे के

शिमयनमदार । समयमया सहमदनमनोरथभावितया
सविकारम् । अत्र-११ । प्रथमसमागमलजितया पटचाट
शतैरनकले । सडमधुरस्मितभावितया शिथिलीकृत
जवनडकलम् । सविहेकेशिमयनमदारे समयमया
सहमदनमनोरथभावितया सविकारम् । १२ । किं
लयशयननिवेशितया चिरस्रसि ममैवशयानम् ॥

शक्ति
गी

कृतपरिरेभणुस्वनयापरिरभ्यकृताथरयानम् । सति
हे केशिमथन सदा रे रमय मया सह मदन मनोरथभा
वितया सविकारम् । ३॥ अलसनिमीलित लोचनया प्र
लका वलि ललित कपोलम् । प्रमजल सकल कलेव
रया वरमदन मदादति लोले । सति हे केशिमथन स
दारे रमय मया सह मदन मनोरथभावितया सविकारे ४

कोकिल कलर वक्त्रजितया जितमनसि जनेत्रविचारे । स
यजसमा कलकेतलया नावलिखितचनस्तनभारम्
सखिहे केशि मयनसदारे मयमया सह मदनमनोरथ
भावितया सविकारम् ५ चरणरणीतमणानूपरयाप
दिष्टरितसुरतवितानम् । सखि विस्मेलमेव लया
सकचग्रहबुम्बतदानम् । सखिहे केशि मयनसदारम्

राखे
गी

रमय मया सह मदत मनोरथ भावितया सविकारम् ॥ ६
रति सख समय रसाल सया दरम कलित नयन सरोजे ।
निःसह निपतित नवलतया मथ सुदन मदित मनोजे
सखि हे केशि मयन मदारम् रमय मया सह मदत मनो
रथ भावितया सविकारम् ७ श्रीजयदेव भणित मिदम्
निशय मथुरिषु निधुवन शीलम् । सख मत्के दित गोप

वधूकथिते वितनोत्तमलीलम् ॥ सखिरे केशिमयन
मदारम् रमय मया सह सदन मनोरथ भावितया सविका
रमाद ॥ श्लोक ॥ हस्तसस्त विलास वेशम नृज भूव
लिमदलवी वेदोत्तारिदगन्तरी तित मति सेदार्द्रगोद
स्थलम् । मामदीत्य विललितस्मितसुधा सुगानने
कानने । गोविन्दव्रज सेदरी गणा वृते पश्यामि हृष्यामि

श. वि
गी

च १ उगलोकस्तोकस्तवकनवकाशोकलतिका विका
शः कासाशे पवनपवनोऽपि व्यथयति । अपि भ्राम्यन्ते गी
रगित रमणीयानमकुल । प्रसूतिस्तूतानो सविशिख
दिणीये सखयति २ साकृतसितमा कुला कुलगलह
मिल मलासित । भूवली कमलीक दर्शित भजा मला
ईदृष्टस्तनम् । गोपीनां निभते निरीक्ष्य गमिता कोत्तश्चिरे

चिन्तयन्नन्तर्मग्यमनोहरे हरतवः क्लेशे नवः केशवः ३

केसारिरपि संसारवासनाबंधं स्रज्वलाम् । राधासायायह

दये तन्माजव्रजसंदरीः ४ इतस्ततस्ताम्रसूत्रराधिकाम

नेरावाणावणिविन्नमानसः । कृतानुतापः सकल्लिदने

दिनी तदा न्तकेजे निषसादमायवः ५ ॥ अष्टपदी ॥ ७ ॥

सामियेचलिता विलोकावतेवधूनिचयेन । सापरायत

शंखे
गी

या मयापिनवारितातिभयेन । हरिहरिता हरतयागता
सा कृपितेव ॥ किंकरिष्यति किंवदिष्यति सा विरेविरे
॥ किंथनेन जनेन किं ममजीवितेन गरेणा २ वितया
मि तदानने कटिलकरोषभरेणा । शोण पत्र मिबोपरिध
मता कले भ्रमरेणा । हरिहरिता हरतया गता सा कृपिते
व ३ तामरे हरिसेगता मनिशे भ्रशे रमयामि । किंवनेन

सगमि किं वृथा विलयासि । हरिहरि हता हरतया गता
सा ऊपितेव ४ तन्निविन्नमस्यया हृदये तवा कलया
सि । तन्न वेमि ऊतो गतासि न तेन तेन नयासि" हरिहरि
हता हरतया गता सा ऊपितेव ५ ॥ पश्य मे पुरतो गता ग
तमेव मे विद्यासि । किंपरेव स संभ्रमे परिभ्रमो न ददा
सि" हरिहरि हता हरतया गता सा ऊपितेव ६ तम्यताम

रा. खे.
गी.

परे कदापि तवे दृशेन करोमि । देहि से दारि दर्शने मम मन्त्र
येन उनोमि । हरि हरि हता हरतया गता सा कुपितेव ७
वर्णिते जय देव केन हरेरि देशातेन । तिड विल्व समद्रसे
भवरोहिणी रमणेन । हरि हरि हता हरतया गता सा कु
पितेव ८ ॥ श्लोक ॥ भूपल बोधनुरपो गत रंगितानि-
वाणा यणाः प्रवणा पालि रिति स्मरेण । तस्या मने गजय

जेगमदेवताया । मखाणि निर्जित जयेति किमर्पितानि
१ हृदिविसलतासरो नाये भजेगमनायकः । ऊवल यद
लश्रेणीकेदेन सागरलफतिः । मलयजरजोनेदेभस्म
यारहिते मयि । प्रहरन हर भोत्पा नेगक्रथा किमथाव
सि २ पाणौ माक्रु हृत सायकममे माचापमारोपय
क्रीडातिर्जित विश्वमूर्खितजना । चातेन किंपौरुषम्

शंखे
गी

तस्याप्यस्यगीदृशो मनसिज प्रेतकटाक्षानिल । ज्वाला
जर्जरिते मनागपि मनो नाशापि सेश्वरते ३ भ्रूवापे नि
हितः कटाक्षविशालो निर्मातृमर्मवधे । यथा मात्मा
ऊदितः करोत कवरी भागेपि नाशेयमे । मोहेता वदयेव
तलितवतो विवाथशेरागवान् । सहतस्तनमेतलस्तव
कथे प्राणेर्मम क्रीडति ४ तानि स्पर्शस्त्वानिते चतरल

स्त्रियादृशो विश्रमा । स्रद्धां वज्रसौरभे सचसुधास्येदी
गिरिवक्रिमा । सावित्राय रमाधरीति विषया संगीपिमन्
मानसे । तस्य लघु समाधि हेतुविरह व्याधिः कथं वर्तते
५ तिर्यककंद विलोल मौलि तरलोत्तमस्य वेशोच्चर ॥
ज्ञातस्यान कृता वधानललना लक्ष्मिर्नमेलदिताः । मे
मुरये मधुसूदनस्य मधुरेणामुविदौ मृदः । स्पंदेपल

रा. वि.
गी.

विताश्चिरेददत्तयः तेमेकदातोर्मयः ६ यमनातीरवा
तीर निजेजे मेदमास्थितम् । शरप्रेमभरोत्ताने माथवेरा
धिकासखी ७ ॥ शुष्टपरी ॥ ८ ॥ निदतिवेदन मिड किर
ए। मन विदति खिद मयीरे ॥ व्याल निलय मिलनेन गरल
मिव कलयति मलय समीरे । साविरहे तवरीना माथव
मनसिज विशिख भयादिव भावन या तयिलीना १॥ ३५

अविरल तिष्ठति मदन शय दिव भवदवनाय विशाले
स्वहृदय मर्मणि वर्म करोति सजल नलिनी दलजाले
साविरहे तवदीना मायव मनसि ज विशिखभया दिव
भावनया त्वयि लीना २ ऊखम विशिख शरतल्प मन
ल्प विलासकला कमनीयम् । अतस्मिन् तव परिरेभ
सखाय करोति ऊखम शयनीयम् । साविरहे तवदीना

रा. वि.
गी.

मायव मनसिज विषाख भयादिव भावनया त्रयिलीना ३
वहति चलि त विलोचन जलधर मानन कमल मदरे । वि
प्रमिव विकट विषे तददेत दलन गलिता मृत्यारम् ॥
साविरहे तव दीना मायव मनसिज विषाख भयादिव
भावनया त्रयिलीना ४ ॥ विलिखति रहसि ऊरेण
मदेन भवेत स सम शरभूतम् । प्रणामति मकर मथो वि

तिथायकरेवशरेनवचूतम् ॥ साविरहे तव दीनामाथ
व मनसिज विशिख भयादिव भावनया त्वयिलीना ।
५ ॥ प्रतिपद मिदमपि निगदति माथव तव चरणे पति
ताहम् । त्वयि विमले मयि सपदि स्याति धिरपि तत्र
ते तव दाहम् ॥ साविरहे तव दीनामाथव मनसिज वि
शिख भयादिव भावनया त्वयिलीना ६ ॥ ध्यातलये

सावि
त्री

नष्टरूपपरिकल्प्यभवेत्तमतीव दुःखम् । विलपति हसति
विषीदति रोदिति चेन्नति मेवति तापम् ॥ सावित्रे तव
दीनामायव मनसिज विशिख भयादिव भावनया त्वयि
लीना ॥ श्रीजयदेवभणित मिदमधिकं यदि मनसा
नटनीयम् । हरिविरहाजलवल्लव भवति साखीवच
ने पटनीयम् । सावित्रे तव दीना मायव मनसिज वि

शिवभयादिवभावतयात्वयिलीना द॥ श्लोक॥ श्रवा
सो विपिनार्यते प्रियसाखी साक्षापि जालायते । तापोपि
असितेन दावदहन ज्वाला कलापायते । सापितद्विरहे
एतद्देतद्दृष्टिणी रूपायते हा कथं । केदोर्पोपियमायते विर
चयन्तशार्दूल विक्रीडितम् ॥ अष्टपदी ॥ द॥ सनवि
तिहितमपि हारमदारम् । सामन्वते कृशतनुरतिभारम् ।

श-वे
गी

शयिका विरहे तव केशव । ५ । सरसमस्तमपि मल
य जपे कम । पश्यति विषमिव वपुषि स सेकम् । शयि
का विरहे तव केशव । ६ । श्वसित पवन मन्त्रपत्र परिणारे
मदन दहन मिव वहति सदाहम् । शयिका विरहे तव के
शव ३ दिशि दिशि किरति सजल कणा जालम् । नय
न नलिन मिव विगलित नालम् । शयिका विरहे तव के

शब्द ४॥ नयनविषय मपि किमलयतल्यम् । गाय
ति विहितङ्गताश विकल्पम् । राधिका विरहे तव केश
व ५ त्यजति न पाणि तलेन कपोलम् । बालशशिन
मिव सायमलोलम् । राधिका विरहे तव केशव ६ ह
रिति हरिति जपति स कामम् । विरह विहित म
रणो वनि कामम् । राधिका विरहे तव केशव ७ श्रीज

रा. वि.
शी.

यदेव भागितमिति गीतम् । सखयत्त केशव पदमपनी
तम् ॥ राधिका विरहेतव केशव द ॥ श्लोक ॥ सारोमो
चति सीत्करोति विलपसत्केपतेताम्यति । ध्यायत्तुम
ति प्रमीलति पतत्तयाति मूर्च्छत्यपि । एतावत्तत्तु ज्ञे
वरत्तन जीवेन्न किं ते रसा । त्वर्वेद्य प्रतिम प्रसीदसि यदि
त्यक्तो मया हस्तकः । स एतरो दैवत वैद्य ह्य न देवा से

गामृतमात्रसाध्या । विमुक्तवायोऽकुरुषे नराधामर्षेद्र
वज्रादपि दारुणोसि २ केदर्यं ज्वरमंजय ऊलतनोराश्च
र्यमस्याश्चिरे । चेतश्चेदन चेदमः कमलिनी चित्तासना
स्यत्यपि । किं त्वदोति वशेन शीतलतने त्वामेकमेव शि
ये । आयेतीरहसि स्थिता कथमपि क्षीणाक्षणा प्राणि
ति ३ क्षणमपि विरहः प्रणनसेहे । नयननिमीलन

राखे
गी

विन्नयाययाने । स्वसितिकयमसौरसालशाखे । विर
विरहेण विलोकाश्रयिताग्राम् ४ वृष्टिवाकलगोज
लावनवशा उदृत्यगोवर्धने । विशुद्धलवसेदरीभिर
थिकानेदाचिरेवेवितः । केदरेणतदर्पिताथरतदी सिंह
रमुद्राकिनो । वाङ्मगीपतनोस्तनोत्तभवतोप्रेयोसि
केसद्विषः ५ अहमिहनिवसामियाहिराधामननय ॥

महचनेन चानयेयाः । इति मथरिषणा सखीति युक्ता ख
यमिदमेतत् पुनर्जगादशथाम् ६ अष्टपदी ॥ वहति मलय
समीरे मदनमपतिथायस्तुदति कुसुमतिकरे विरहिह
दय दलनाय । तव विरहे वनमाली सखि सीदति । अ-१२
दहति शिशिरमृते । मरणा मनुकरोति । पतति मद
न विशिखिविलपति विकलतरोति । तव विरहे वनमा

श. वि.
गी

ली सखि सीदति २ धनतिमथप समूहेष्ववगमपि दया
ति । मनसि च लित विरहे निशि निशि रुज मपयाति ॥
तव विरहे वनमाली सखि सीदति ३ वसति विपिनविता
नेत्यजति ललित मपि थाम । लुढति थराणि शयने वद्ध
विलपति तव नाम । तव विरहे वनमाली सखि सीदति
४ भणति कवि जयदेवे विरहि विलसितेन । मनसि

भसविभवे । हरिरुदयतसकृतेन । तवविरहे वनमा
ली सावित्रीदति ५ श्लोक ॥ सर्वयत्रसमेतयारतिपते
यसादिताः सिद्धय । सास्त्रिनेव निजेज मन्मथमहाती
र्थे पुनर्मायवः । ध्यायेत्तामनिशं जपन्नपितवैवालाप
मेवावलिं । भूयस्तत्कृत्वकेभ निर्भरपरीरेभास्तैवो
च्यति १ अष्टपदी १॥ रतिस्तु सारगतमभिसारे । म

रा-ले
गी-

दनमनोहरवेशाम् । नऊरुतिनेवितिगमनविलेवनम
नुसरतेहृदयेशम् । थीरसमीरेयमनातीरेवसतिवनेवन
मालीगोपीपीनपयोधरमर्दनचेवलकरयुगशाली ॥ भु-
नामसमेतेकृतसेकेतेवाद्यतेमृदवेणो । वद्धमन्त्रेन
नृतेतनुसंगतपवनचलितमपिरेणम् ॥ थीरसमीरेय
मनातीरेवसतिवनमालीगोपीपीनपयोधरमर्दनचेव

लकरप्रगशाली २ पततिपतत्रे विवर्तति पत्रे शक्ति
भवउपयानम् । रचयति शयने सचकित नयने पश्यति
तव पंथानम् । थीरसमीरे यमुना तीरे वसति वनमाली
गोपी पीनपयोधरमर्दन चंचल करप्रगशाली ३ स्रव
रमथीरे लज्जमेजीरे रिपुमिव केलि सलोत्तम । चलस
विज्जेजे सति मिरजे शील यनील निचोत्तम । थीरस

श. वि.
गी.

मीरे यमनातीरे वसति वनमाली गोपीपीन पयोधर म
र्दन चंचल करप्रगशाली ४ उरसि मयारे रूपरित हारे । च
न श्वतरल वलाके तरिदिव पीतेरति विपरीते । राजसिख
कृत विषाके । यीरसमीरे यमनातीरे वसति वनमाली
गोपीपीन पयोधर मर्दन चंचल करप्रगशाली ५ विरा ।
लित वसने परिहृतरशने चटयज चत मपिथाने । कि

सलयशयनेपेकजनयने विधिसिव हर्षनिधानम् ॥
धीरसमीरे यमनातीरे वसति वनमाली गोपीपीत प
योथरमर्दनचेचलप्रगशाली ६ हरिरभिमानो रजनि
रिदानीमियमपि पाति विग्रहम् । कुरुममवचने सत्त
रचने प्रयमप्रिप्रकामम् । धीरसमीरे यमनातीरे
वसति वनमाली गोपीपीत पयोथरमर्दनचेचलप्रगशाली ७

रा. वि.
गी.

श्रीजय देव कृत हरि सेवे भणति परम रमणीयम् ॥ प्रम
दित हृदये हरि मति सदये नमत सकृत कमनीयम् ॥
धीरसमीरे यमनातीरे वसतिवनमाली गोपीपीतपयोध
रमर्दनचेचलकरप्रयाशाली । ५ । श्लोक ॥ विकिरति
मुहुःश्वासानाशाः पुरो मुहुरीक्षते । प्रविशति मुहुःके
जेयेजन्म मुहुर्वदन्ताम्यति । रचयति मुहुः शयोपयीक

लेमजरीलो मदन कदन क्लानः कोने प्रियस्तववर्तते १
त्वदाकेन समे समग्रमथना निगमोचुरस्तेगानो । गोवि
दस्य मनोरथेन च समे प्रामेतमः सोदताम । कोकानो
करुणा स्वनेन सदृशी दीर्घा मदभ्यर्थना । तन्मग्ये वि
फले विलेवनमसौ रम्यो भिसारद्वाराः २ आश्लेषाद
ननु म्वना दननलोलेखादनस्वातज । प्रोद्धायादन

रा. वि.
गी

संभ्रमादन्तराभादन्तरीतयोः । अन्तर्यागतयोर्भ्रमा
न्तिलितयोः संभाषणौर्जीनतो । दैपत्योर्निषिको न के
न तमसि व्रीडा विमिश्रो रसः ३ सभयव किते वित्तये
तो दृशेति मिरेपथि । प्रतिनरुमद्गः स्थित्वा मे देपदा
नि वित्तन्वतीम् । कथमपि रद्गः प्राप्ता मे गौरने गतरे गि
भिः । समन्ति सभगः पश्यन् सत्तामपैत कृतार्थतो ४

राधा मृग मखार विंड मधुप है लोक मौलि स्थली । ने
पणो चित नील रत्न मवनी भारा वतारत्नमः । स्वच्छंदे
व्रज संदरी जन मन स्तोष प्रदो वञ्चिरे । केस धेसन धूम
केत रवत त्वो देव की नंदनः ५ आर्या प्रयतो गत मश
क्तो विर मत्त रक्तो लता गदरे दृष्टा । तच्चरिते गोविंदे मन
सिज मे दे सखी शह ६ ॥ अष्टपदी ॥ १॥ पश्यति दिशि

रा. वि.
गी.

दिशि रहसि भवेत्तम् । तदथ रसधर सधृतिपि वेत्तम् ॥ ना
यहरे जय नायहरे सीदति राधावासगृहे । अ- ॥ १ ॥ त्वदधि
सखा रभसेन वलेती । पतति पदाति कियेति चलेती-
नायहरे जय नायहरे सीदति राधावासगृहे २ विहित
विशद विस कि सलय वलया । जीवति परमिह न वरति
कलया । नायहरे जय नायहरे सीदति राधावासगृहे ३

सुन्दरवलोकितमेउनलीला । मधुरिषु रङ्गमिति भाव
नशीला । नाथहरे जयनाथहरे सीदति राधावासगदहे
५ स्निग्धनिबुधति जलथरकल्पे । हरिरूपयत इति
तिमिरमनल्पम् । नाथहरे जयनाथहरे सीदति राधा
वासगदहे ६ ॥ भवति विलेविनि विगलितलजा । वि
लपति रोदिति वासकसजा । नाथहरे जयनाथहरे सी

श-ले
गी

दतिशथावासगृहे ७ श्रीजयदेवकवेरिदसदितम् । र
सिकजनेतनतामतिमदितम् । नाथहरेजयनाथहरे
सीदतिशथावासगृहे ८ ॥ श्लोक ॥ विपुलपुलकपा
लिःस्फीतसीत्कारमेतर्जनितजडिमकाज्ज्याज्जलेव्या
हरेती । तवकितवविथाया मेदकेदर्पचितोरसजल
यितिमगनाथातलग्नामगाती । १॥ श्रेयसाभरणक

रोतिवद्भूशः पत्रेपिसेवारिणि । प्रामेत्तोपरिशेकतेवित
नृतेषां विरेयायनी । श्याकल्पविकल्पतत्परच ।
नासेकल्पलीलाशत । व्यासक्तापि विना त्वया वरत
नर्नेषानिशोनेषति २ किंविश्राम्यसि हृल्लभोगि
भवने भोडीरभूमीरुहि । भातर्याहिनदृष्टिगोचर
मितः सानेदनेदस्यदम् । राथाया वचनेतदधराशुवा

श.ले
गी

त्रेदोतिके गोपते । गोविंदस्य जयेति सायमतिथिप्राश
स्वगर्भागिरः ३ अशोतेरेव कुलदा कुलवर्त्तमानसे जात
पातक ३ वस्कर लोचनश्रीः । वेदावनोत्तरमदीपयदेष
जालैर्दिकसंदरी वदनवेदन विंडरिंडः ४ आर्या प्रसर
तिशशथरविंवे विहित विलेवेवमाथवे विश्वरा विरचि
त विविथ विलापे सापरितापे चकारोच्चैः ५ ॥ अष्टम

दी। १२॥ कथित समयेपि हरिरहहन ययौवनम् । ममवि
फलमेतदन रूपमपियौवनम् । यामिहेकमिह शरणे स
खीजन वचनवेचिता । अ० १॥ यदनुगमनाय निशिग
हनमपि शीलितम् । तेन मम हृदय मिदम सम शरकी
लितम् । यामिहेकमिह शरणे सखीजन वचनवेचिता
२ मम मरणमेव वरमति वितथ केतना । किमिह विष

शखे-
गी-

शमिविरहानलमचेतना । यामिहे कमिह शरणे साखीज
नवचनवेचिता ३ मामहह विधुरयति मधुरमधुयामिनी-
कापि हरिमन भवति कृतसकृत कामिनी । यामिहे क
मिह शरणे साखीजनवचनवेचिता ४ अहह कलयासि व
लयादि मणि मूषणम् । हरिविरहदहन वहनेन वद्धदृष
णे । यामिहे कमिह शरणे साखीजनवचनवेचिता ॥ ५ ॥